International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-08-2020; Accepted: 05-09-2020; Published: 21-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 32-35

युग निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीः एक जीवन परिचय

अनुभा कुमारी
बालिगा उच्च माध्यमिक विद्यालय, खगौल, पटना, बिहार, भारत

सारांश
महावीर प्रसाद द्विवेदीजी का नाम हिन्दी, भाषा, साहित्य तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुपम तथा अद्वितीय है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पश्चात् अगर किसी व्यक्ति से विशेष रूप से हिन्दी भाषा, साहित्य तथा पत्रकारिता को मार्गदर्शन मिला है, तो उसमें महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का नाम आदर से लिया जाता है। हिन्दी–पत्रकारिता को उन्होंने उँचाई तथा श्रेष्ठता प्रदान की है। भाषा–संशोधन, परिष्कार, शुद्धता तथा व्याकरण का ध्यान इनका मूल है। हिन्दी पत्रकारिता को श्रेष्ठता तथा दिव्यता प्रदान करने के कारण इन्होंने अपने कार्यकाल को अधिकाधिक प्रभावित किया। इसी कारण हिन्दी सेवा की इस अवधि को 'द्विवेदी युग' कहा जाता है। 'भारतेन्दु युग' और 'द्विवेदी युग' हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। 1903 ई॰ में वे 'सरस्वती' के संपादक हुए और 1920 ई॰ तक वे उसका संपादन करते रहे। इन दो दशकों में उन्होंने जो कुछ किया। उसी के बल पर इस युग को 'द्विवेदी युग' की संज्ञा दी गई। ''आपके संपादन में जहाँ 'सरस्वती' की बहुमुखी उन्नति हुई, वहाँ आपके द्वारा हिन्दी–साहित्य के उत्कर्ष का नया अध्याय भी प्रारंभ हुआ। आपने अपनी कर्मठता से यह सिद्ध करके दिखा दिया कि एक पुरूष अपने ही उद्योग से विद्वता प्राप्त करके साहित्य–निर्माण की दिशा में उन्नति के शिखर पर किस प्रकार प्रतिष्ठित हो सकता है।
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी वास्तव में हिन्दी भाषा और पत्रकारिता जगत के 'महावीर' हैं। हिन्दी भाषा और पत्रकारिता के क्षेत्र में जो अमूल्य काम वे कर गए हैं, वह उनका 'अमूल्य प्रसाद' ही है। हिन्दी भाषा–भाषी लोग आज उस 'महावीर' के 'अमूल्य प्रसाद' को ग्रहण करके तृप्त हो रहे हैं। आचार्य द्विवेदी जी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से अनेक कवियों, साहित्यकारों और पत्रकारों का निर्माण किया। इन कवियों के निर्माण के कारण हिन्दी–काव्य या कविता का भंडार भर गया। इन साहित्यकारों के निर्माण के कारण हिन्दी–साहित्य का भण्डार समृद्ध हुआ। यह काम अप्रत्यक्ष रूप से होता रहा है। जिन साहित्यकारों का उन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से निर्माण किया है उन साहित्यकारों ने हिन्दी–साहित्य को उत्कृष्टतम कृतियों से सुसज्जित किया।

मूल शब्दः महावीर प्रसाद द्विवेदी, द्विवेदी युग, साहित्य, पत्रकारिता इत्यादि

प्रस्तावना
महावीर प्रसाद द्विवेदी का नाम भाषा, साहित्य तथा पत्रकारिता में शीर्ष पर है। वह हिन्दी–पत्रकारिता के पुरोधा हैं। यही कारण है कि द्विवेदीजी का नाम हिन्दी का सामान्य पाठक भी जानता है और अच्छी तरह से जानता है। हिन्दी का छात्र, चाहे वह प्राथमिक विद्यालय में पढ़ता हो, माध्यमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहा हो, महाविद्यालय स्तर की विद्या प्राप्त कर रहा हो, विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का अध्ययन कर रहा हो अथवा शोध कर रहा हो सभी के सभी परिचित हैं। इसका कारण है कि द्विवेदी जी का व्यक्तित्व और कृतित्व विराट और व्यापक है। उनका विराट व्यक्तित्व हिन्दी भाषा, साहित्य और पत्रकारिता पर व्यापक रूप से आच्छादित है। इन्हें भुलाये भी नहीं भुलाया जा सकता है। हिन्दी पढ़ने वाले साधारण स्तर के पाठक और प्राथमिक कक्षा के छात्र तक जब उनके नाम और काम से सुपरिचित हैं, तो फिर क्या कहना है ? इससे उनके विराट व्यक्तित्व और कृतित्व की प्रमाणिकता का पता चलता है। प्राथमिक कक्षा का पाठ्य–क्रम निर्माण करते समय ही महावीर प्रसाद द्विवेदी की रचनाओं को शामिल करना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि इनके नाम और इनकी रचनाओं को सम्मलित किए बगैर छात्रों को हिन्दी भाषा पढ़ायी ही नहीं जा सकती है। हिन्दी का पाठ्य क्रम हो और उनमें महावीर प्रसाद द्विवेदी नाम और उनकी कोई रचना न हो तो फिर हिन्दी भाषा की पढ़ाई हो ही नहीं सकती है। हिन्दी भाषा और महावीर प्रसाद द्विवेदी दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं, पर्याय हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के नाम के बिना हिन्दी भाषा को जाना ही नहीं जा सकता है। इसीलिए प्राथमिक कक्षा के पाठ्यक्रम से ही आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के नाम और उनकी रचना से विद्यार्थी वर्ग को परिचित कराया जाता है। आजकल देश में साक्षरता अभियान चलाया जा रहा है। पूर्व की तरह आज की मनोदशा और मनोवृत्ति नहीं रह गई है। गाँव–गाँव का किसान, श्रमिक, कुली, हलवाहा आदि तक अपने बाल–बच्चों को पढ़ाना चाहता है, शिक्षित करना चाहता है– अपना पेट काट करके भी, किसी तरह से दो पैसा बचा करके भी। फिर राजकीय और सरकारी साधनों से भी शिक्षा को घर–घर और व्यक्ति–व्यक्ति तक पहुँचाने का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। ऐसी मनोवृत्ति तथा चेष्टा के कारण शिक्षा का तेजी से प्रसार हो रहा है। इस शिक्षा के प्रवाह में सबसे पहले भाषा को माध्यम बनाया जाता है। इस माध्यम में मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा हिन्दी ही सर्वोपरि है। इसीलिए सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी का ज्ञान कराया जाता है। इस राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी का ज्ञान कराने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का ज्ञान कराना प्राथमिक रुप से अनिवार्य हो जाता है। इस हिन्दी भाषा को सुधारने, सँवारने तथा सजाने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी का नाम सर्वोपरि है। हिन्दी भाषा को परिमार्जित तथा परिवर्द्धित करने में द्विवेदी जी का योगदान अन्यतम है। आजकल हिन्दी भाषा का जो सजा, सँवरा तथा परिष्कृत रूप हमारे सामने देखने और पढ़ने को मिल रहा है, उसका श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को ही जाता है। यही कारण है कि हिन्दी का साधारण पाठक वर्ग भी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी को श्रद्धा और आदर के साथ जानता है और पढ़ता है।
यशस्वी, मनस्वी तथा मनीषी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के सम्बध में जानने की उत्सुकता होती है कि आखिर ऐसे महापुरुष,

साहित्याचार्य और भाषा आचार्य का जीवन क्या है? उनका जन्म कहाँ हुआ है? उनका जन्म किस समय में हुआ है ? उनकी पारिवारिक स्थिति क्या रही है ? 'हिन्दी साहित्य कोश' के सम्पादक मण्डल ने शोधपूर्वक उनके जीवन और जन्म के सम्बन्ध में जो तथ्य और सत्य निरूपित किए हैं वे इस प्रकार हैं– ''महावीर प्रसाद द्विवेदी गद्य–साहित्य के युग प्रवर्तक हैं। हिन्दी भाषा और पत्रकारिता के इस महायोद्धा का जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिला के अंतर्गत दौलतपुर गाँव में 15 मई, 1864 को एक साधरण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। द्विवेदी जी के पितामह संस्कृत के विद्वान थे परंतु द्विवेदी जी मामूली हिन्दी जानते थे। ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण विद्याध्ययन संस्कार पूर्वजीय था। गाँव में भी ब्राह्मण परिवार के बीच कुछ न–कुछ पंडिताई की पढ़ाई होती ही रहती थी। द्विवेदी जी पर शिक्षा और विद्या का संस्कार गाँव की पाठशाला से ही रहा है। आपके पिता का नाम राम सहाय द्विवेदी था। इसीलिए उन्होंने पुत्र का नाम महावीर सहाय रखा। प्रधानाध्यापक ने भूल से आपका नाम महावीर प्रसाद लिख दिया था। हिन्दी साहित्य में यह भूल स्थायी बन गई।'' इस प्रकार नामकरण के सम्बन्ध में उपर्युक्त तथ्य से ज्ञात होता है कि असली नाम 'महावीर सहाय' ही रखा गया था। लेकिन, भूल से महावीर प्रसाद हो गया। आगे चलकर 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' के रूप में आप प्रसिद्ध हो गए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने जीवन के विषय में स्वयं 'मेरी जीवनरेखा' शीर्षक निबन्ध के अन्तर्गत कहते हैं– ''मैं एक ऐसे देहाती का एक मात्र आत्मज हूँ, जिसका मासिक वेतन सिर्फ 10/– था। अपने गाँव के देहाती मदरसे में थोड़ी सी उर्दू और घर पर थोड़ी–सी संस्कृत पढ़कर 13 वर्ष की उम्र में, मैं 36 मील दूर, राय बरेली के जिला स्कूल में अँग्रेजी पढ़ने के लिए गया। आटा, दाल, घर से पीठ पर लाद कर ले जाता था। दो आने महीने फीस देता था। दाल ही में आटा का पेड़ा या टिकिया पका करके पेट पूजा करता था। रोटी बनाना तब मुझे आता ही न था। संस्कृत भाषा उस समय उस स्कूल में वैसी ही अछूती मानी जाती थी, जैसी मद्रास के नम्बूदरी ब्राह्मणों में शूद्र जाति समझी जाती है। विवश होकर अंग्रेजी के साथ फारसी पढ़ता था। एक वर्ष किसी तरह वहाँ काटा। फिर, पुरवा, फतेहपुर और उन्नाव के स्कूलों में चार वर्ष काटे। कौटुम्बिक दुरावस्था के कारण मैं उससे आगे न बढ़ सका। मेरी स्कूली शिक्षा भी वहीं समाप्ति हो गई।''

निष्कर्षत

द्विवेदीजी के स्वयं के आत्मकथन से उनकी पारिवारिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक स्थिति का पता सहज ही चल जाता है। द्विवेदीजी की शिक्षा पर विचार करते हुए डॉ• नन्द किशोर नवल जी आगे जो तथ्य प्रकट करते हैं, वे इस प्रकार हैं– ''द्विवेदीजी की शिक्षा प्राप्ति की कहानी बड़ी विचित्र है। शुरु में उन्हें घर पर ही थोड़ी–सी संस्कृत पढ़ाई गई। उन्होंने शीघ्रबोध, अमरकोष और दुर्गा सप्तशती पढ़ना शुरु किया, लेकिन अभी आधा ही पढ़ा होगा कि उनकी वह पढ़ाई छुड़ा दी गई और उन्हें गाँव के एक मदरसे में दाखिल कर दिया गया। वहाँ उन्होंने थोड़ी–सी उर्दू पढ़ी।'' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के जीवन पर शोधपरक तथ्य और सत्य को प्रकट करने वालों में डॉ• नन्द किशोर नवल जी का नाम अग्रगण्य है। डॉ• नवलजी ने विस्तार पूर्वक द्विवेदी जी के जीवन पर शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किया है–'जीवन रेखा' शीर्षक के अन्तर्गत। डॉ• नवलजी ने द्विवेदीजी के पूर्वजीय तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षणिक स्तर पर गंभीरता पूर्वक विचार किया है–''द्विवेदीजी के दादा पं• हनुमंत द्विवेदी संस्कृत के अच्छे पंडित थे। वे बंगाल की छावनियों में स्थित हिन्दुस्तानी पलटनों को पुराण सुनाया करते थे। दुर्भाग्यवश वे असमय में ही चल बसे, जिससे वे अपने पुत्रों की पढ़ाई–लिखाई की व्यवस्था न कर सके।.... द्विवेदीजी की दादी ने उनके दादा के मरने के बाद उनके द्वारा एकत्र की गई सैकड़ों पुस्तकें बेच–बेचकर उनके चाचा और पिता का पालन किया। बड़े होने पर द्विवेदीजी को भी दो–चार पुस्तकें घर में पड़ी मिलीं। दादा की तरह ही उनके नाना और मामा भी संस्कृतज्ञ थे। नाना ने तो नहीं, लेकिन मामा ने स्वयं उन्हें अपने संस्कृत–ज्ञान का परिचय दिया था।'' निष्कर्षतः उपर्युक्त वाक्यों से द्विवेदी जी के जीवन के पूर्वज तथा परिवार में व्याप्त आर्थिक अभाव एवं स्थिति के साथ–साथ शैक्षणिक परिवेश का पता चल जाता है।

उपर्युक्त कथन से द्विवेदीजी की शिक्षा के संबंध में प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त होता है। आगे जो तथ्य उनके जीवन के संबंध में आते हैं, वे हैं– ''द्विवेदीजी अपना खाना अपने हाथों बनाते थे। चूँकि उन्हें रोटी बनाना नहीं आता था, वे दाल में टिकिया बनाकर डाल देते थे और उसी से पेट भरते थे।'' स्पष्ट हो जाता है कि द्विवेदीजी शिक्षा ग्रहण करते ही महापुरुषों की तरह जीवन यापन करना प्रारंभ कर दिये थे। विवेकानन्द आदि अनेक महापुरूष स्वयं खाना बनाकर खाते थे। इन्हीं महापुरुषों की श्रृंखला में द्विवेदीजी हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी रेलवे में नौकरी भी करते थे। इस नौकरी को करते हुए भी स्वाध्याय में मनोयोगपूर्वक संलग्न रहते थे। इस नौकरी को करते हुए भी उन्होंने चार प्रकार के सिद्धांत अपने जीवन के लिए स्थिर कर रखा था– (1) वक्त की पाबन्दी करना, (2) रिश्वत न लेना, (3) अपना काम ईमानदारी से करना, (4) ज्ञान वृद्धि के लिए सतत् प्रयत्न करते रहना । रेलवे विभाग में कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ काम करते हुए आगे उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। सहित्य तथा पत्रकारिता की सेवा की और इस ओर प्रवृत्त हुए। हालांकि रेलवे में नौकरी करते हुए भी उनमें हिन्दी–प्रेम का बीज विद्यमान था। रेलवे में नौकरी आर्थिक अभाव और परिवार के पालन–पोषण वाले दायित्व के निर्वाह की विवशता ही रही है। फिर हार्दिक अभिलाषा और महत्वाकांक्षा हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा करना ही रही है। हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए उनका अन्तर्मन हमेशा छटपटाता रहा है। अन्ततः वह पुण्य और मूल्यवान अवसर भी आकर उपस्थित होता है, जब वे नौकरी से सदा के लिए त्याग पत्र देकर हिन्दी भाषा और पत्रकारिता की सेवा में ही लग जाते हैं। यही उनका मूल लक्ष्य और उद्देश्य भी रहा है।

आचार्यजी हिन्दी भाषा और पत्रकारिता की सेवा करते–करते शरीर से भले ही दुर्बल हो गए थे और पूर्णतः थक गए थे, लेकिन मन से कभी–भी दुर्बल नहीं हुए थे। मन हमेशा और जीवन के अन्त तक हिन्दी के उत्थान के चिन्तन में ही लगा रहता था। द्विवेदीजी के जीवन का अन्तिम समय अत्यन्त कष्टकारक रहा है। जब द्विवेदीजी 40–42 साल की आयु के थे, तभी उनकी पत्नी की गंगा में डूबने से मृत्यु हो गई थी। 74 वर्ष की आयु में 1938 ई• में, 21 दिसम्बर को उनका निधन हुआ था। इस प्रकार 40 वर्ष की अवस्था में पत्नी से वियोग और 34 वर्ष तक लगातार पत्नी की मृत्यु के बाद अकेले का जीवन और निःसन्तान भी रहना। इस प्रकार उनका मन टूट गया था। पारिवारिक दुःखद अवस्था के कारण भी मन दुःखी रहता था। द्विवेदीजी का मन भले ही पारिवारिक दुःखात्मक स्थिति के कारण टूट गया हो, लेकिन इस हालत में भी हिन्दी भाषा, पत्रकारिता और साहित्य से उनका 'मन' आदि (1864 ई•) से लेकर अन्त (1938 ई•) तक जुड़ा ही रहा। अन्ततः हिन्दी पत्रकारिता के लिए समर्पित तथा बलिदानी जीवन व्यतीत करने वाले इस इस महायोद्धा का निधन 21 दिसम्बर, 1938 ई• को हो गया।

आचार्य द्विवेदी जी का व्यक्तित्व विराट और व्यापक है, तो उनमें शिक्षा और संस्कार भी सूक्ष्मतम और महानतम होना अनिवार्य है। और यह अनिवार्यता द्विवेदीजी में अनिवार्य रूप से विद्यमान है। शिक्षा का तात्पर्य हमारी भारतीय और सनातन–संस्कृति एवं व्यवस्था में केवल विद्यालय या शिक्षण संस्थानोंवाली शिक्षा से ही नहीं है। यह हमारी सनातन धर्म तथा संस्कृति की शिक्षा जो है

वह माता–पिता, परिवार, कुटुम्ब तथा आस–पड़ोस वाले सारे वातावरण से सम्मलित रूप में आती है। और यह भी तथ्य ध्यान में रखने योग्य है कि केवल शिक्षण संस्थानों की शिक्षा से ही संस्कार का निर्माण नहीं होता है, वरन अपने आसपास के वातावरण तथा परिवेश से भी अनेक प्रकार की व्यावहारिक शिक्षा मिलती रहती है। यह व्यावहारिक शिक्षा ही व्यावहारिक जीवन में काम आती है। अपने आसपास के परिवेश से संस्कार का भी संचार और निर्माण होता रहता है। यह संस्कार भी कार्य और व्यवहार को प्रभावित करके आगे बढ़ाता जाता है। द्विवेदी जी के जीवन के आसपास के परिवेश तथा वातावरण का सूक्ष्मता से अध्ययन तथा मनन करना होगा। तब कहीं जाकर वे तथ्य सामने प्रकट होंगे कि द्विवेदीजी के व्यक्तित्व–निर्माण में उनके आसपास के वातावरण कितने सहायक रहे हैं। हालांकि अपने आस–पास के परिवेश तथा वातावरण साधक और बाधक दोनों ही रहते हैं। ऐसा कभी–भी नहीं होता है कि व्यक्तित्व के निर्माण में अपने आस–पास से केवल साधक कारण ही आते रहते हों। अपने आस–पास से ही बाधक कारण भी आते रहते हैं। परन्तु महापुरुष, विराट व्यक्तित्व तथा महान व्यक्ति में साधक संस्कार अन्तःकरण में 'बीज' रूप में पूर्वजन्म से ही, प्रारब्ध से ही, अथवा पूर्व से ही विद्यमान होते हैं, जिसके कारण 'साधक और सहायक' परिवेश तो उनका निर्माण करते ही रहते हैं। इसके साथ ही साथ बाधक परिवेश भी उनका निर्माण ही करते हैं। बाधक कारण भी उनको बाधा पहुँचाने में समर्थ नहीं होते हैं। क्योंकि महान, महापुरूष तथा विराट व्यक्तित्व वाले को 'बाधक' कारण या परिवेश बाधा पहुँचाने का माध्यम ही नहीं बन पाते हैं। वे महान पुरुष अपनी महानता से 'बाधक कारण और परिवेश' को भी अपने अनुकूल ही बना डालते हैं। वे बाधक परिस्थितियाँ भी महान लोगों के कार्य में साधक या सहायक बन जाती हैं। वे बाधक अवस्थाएँ महान कार्य करनेवालों के सामने टिक नहीं पाती हैं, भले ही दुर्बल, तुच्छ, साधरण लोगों के सामने वही बाधक कारण बाधा बन जाती हों।

द्विवेदीजी के शिक्षा और संस्कार के वातावरण तथा परिवेश पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ• नंदकिशोर नवल जी कहते हैं–''हिन्दी प्रेम उन्हें गाँव में मिला था। ऊपर कहा जा चुका है कि उनके गाँव में कविता और सवैये गूंजा करते थे। उन्होंने ऐसे सैकड़ों कवित्त और सवैये कंठस्थ कर लिए थे। वहीं उन्होंने रामचरितमानस और ब्रजवासीदास के 'ब्रजविलास' का जमकर पाठ किया था। नौकरी करते हुए जब वे होशंगाबाद पहुँचे तो उन्हें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा संपादित 'कविवचन सुधा' और राधाचरण गोस्वामी द्वारा संपादित 'भारतेन्दु' इन पत्रिकाओं के दर्शन हुए। इन्होंने उनके हिन्दी–प्रेम को बहुत बढ़ा दिया।'' शिक्षा और संस्कार की बात जब द्विवेदीजी के सम्बन्ध में उठती है, तब स्वयं द्विवेदीजी के उस कथन को उद्धृत करना रुचिकर और आकर्षक हो जाता है, जिसे उन्होंने 'मेरी जीवनरेखा' शीर्षक आलेख में प्रकट किया है–''नहीं कह सकता, शिक्षा प्राप्ति की तरफ प्रवृत होने का संस्कार मुझमें किससे हुआ–पिता से या पितामह से या अपने ही किसी पूर्वजन्म के कृत कर्म से'। बचपन में ही मेरा अनुराग तुलसीदास की रामायण और ब्रजवासीदास पर हो गया था। फुटकर कवित्त भी मैंने सैंकड़ों कण्ठस्थ कर लिए थे। होशंगाबाद में रहते समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के 'कविवचन सुधा' और गोस्वामी राधाचरण के एक मासिक पत्र ने मेरे उस अनुराग की वृद्धि कर दी। वहीं मैंने बाबू हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ नाम के एक सज्जन से, जो वहाँ कचहरी में मुलाजिम, थे, पिंगल का पाठ पढ़ा। फिर क्या था। मैं अपने को कवि ही नहीं, महाकवि समझने लगा। मेरा यह रोग बहुत समय तक ज्यों– का– त्यों बना रहा। झांसी आने पर जब मैंने पण्डितों की कृपा से प्रकृत कवियों के काव्यों का अनुशीलन किया, तब मुझे अपनी भूल मालूम हो गई और छन्दोबद्ध प्रलापों के जाल से मैंने सदा के लिए छुट्टी ले ली। पर गद्य में कुछ–न–कुछ लिखना जारी रखा। संस्कृत और अंग्रेजी पुस्तकों के कुछ अनुवाद भी मैंने किए।'' उपर्युक्त आत्मकथन से महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के शिक्षा और संस्कार के विषय में बातें स्पष्ट हो जाती हैं।

'शिक्षा और संस्कार' किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व स्पष्ट करता है। श्री ललती प्रसाद पाण्डेय जो एक प्रसिद्ध समीक्षक हैं, अपने निबन्ध 'द्विवेदीजी का व्यक्तित्व' शीर्षक लेख में लिखते हैं–''द्विवेदीजी में उपकार की भावना प्रबल थी। वह आश्रितों का पालन करते थे, कुछ छात्रों की वृत्ति बांध देते थे और आगतों का स्वागत–सत्कार बड़ी खुशी से किया करते थे। तड़क–भड़क उन्हें पसंद न थी। सादा जीवन उच्च विचार उनका लक्ष्य था।''

उपर्युक्त कथन से द्विवेदीजी के सरल और सादा व्यक्तित्व की जानकारी मिलती

है। आगे यही समीक्षक श्री ललती प्रसाद पाण्डेय कहते हैं–''पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदीजी की अपने लेखकों के साथ प्रबल आत्मीयता थी। जिस लेखक के मस्तक पर द्विवेदीजी का वरदहस्त रहा, वह उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता गया।'' द्विवेदीजी के विचार और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लेखक श्री एस बी पाण्डेय कहते हैं–''आचार्यजी का सारा जीवन स्नेह और ज्ञान से भरा था– जहाँ उनमें दूसरों के प्रति इतनी उदारता और स्नेह था, वहाँ वह निष्ठुर भी थे और बुराई पाकर दया करना नहीं जानते थे। उनकी आलोचनाएँ इसका प्रमाण हैं– परन्तु इस सब के पीछे हिन्दी के कल्याण और उन्नति की भावना ही थी, जो उसे हिन्दी प्रेमी के लिए आदर और श्रद्धा की वस्तु बना देती है और हम आचार्य द्विवेदी जी के सामने सिर झुका देते हैं।''

डॉ• बी आर धर्मेन्द्र द्विवेदीजी के संस्कार और व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए ठीक ही कहते हैं–''आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जीवन–सत्य को उद्घाटित और प्रतिष्ठापित करने वाले मनीषी थे, इसीलिए वे अपने युग तक सीमित हो ही नहीं सकते थे। यही कारण है, वे संपूर्ण समाज में आज भी समादृत हैं और भविष्य में भी समादृत बने रहेंगे ....।''

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की कृतियों का विवरण विशाल है, और केवल विशाल है संख्या की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि विषयों की विविधता तथा गुणवत्ता की दृष्टि से भी। विषयवस्तु की गम्भीरता तथा विवरण–विश्लेषण की वस्तुनिष्ठता, पारदर्शिता, निष्पक्षता, उच्चता और दिव्यता के लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की जोड़ का कोई दूसरा साहित्यकार प्रायः नहीं मिलता है। द्विवेदीजी और द्विवेदी युग पर विचार करने पर जो तथ्य तथा सत्य सामने आकर प्रकट होते हैं, वे बड़े ही विलक्षण तथा अद्भुत हैं। आश्चर्य में डालने वाले ये तथ्य हैं, और साथ ही अचम्भित करनेवाले इसीलिए हैं कि किसी नाम विशेष के आधार पर 'युग निर्माण' होता है। अगर ऐसा होता है तो क्यों होता है? विचारधारा के आधार पर किसी युग का नामकरण हमेशा सुना और समझा जाता रहा है। परन्तु व्यक्ति विशेष के नाम के आधर पर 'युग का नामकरण' अपने–आप में एक विलक्षण और अद्भुत बात तो है ही। 'व्यक्ति विशेष और युग' विलक्षण बात है। जिस व्यक्ति विशेष के नाम को आधर मानकर युग का निर्माण तथा नामकरण किया जाता है, यह उस व्यक्ति विशेष के विलक्षण, विराट, विशाल और व्यापक व्यक्तित्व को बतलाता है।

प्रायः लोग अपने युग की धारा–विचारधारा में बहनेवाले होते हैं। उस धारा–विचारधारा में श्रद्धा से बहें या विवशता से बहें, परन्तु बहते रहते हैं उस धारा में ही। ये बहने वाले प्रायः सामान्य लोग ही होते हैं, जो साधारण और दुर्बल मनोवृति एवं मनोदशा वाले होते हैं। जिनको अपनी समझ नहीं होती है। यह समूह, समुदाय और समाज की ओर देखा–देखी करते हैं और जीवन पथ पर चलते रहते हैं। ये साधारण तथा दुर्बल मनोवृत्ति तथा मनोदशा

वाले भीड़ को देखकर भय खाते रहते हैं। भय से, जैसी भीड़ कहती है वैसा करते रहते हैं। भीड़ के अनुसार न चलने पर कोई कुछ कह न दे, किसी तरह अपमानित न कर दे। भीड़ के सामने भयभीत होकर काम करते हैं, चाहे वह भीड़ में ही क्यों न चले जायें। अपनी ओर से किसी प्रकार का साहस नहीं जुटा पाते हैं– आखिर कि क्या उचित है? क्या अनुचित है ? क्या भला है ? क्या बुरा है ? चलो, जो सब कर रहा है, वैसा ही हम भी करें। जैसा सब कर रहा है, वैसा ही करें। जैसी बहे बयार, पीठ तब वैसी कीजै। लेकिन जब व्यक्ति विशेष के नाम के आधार पर युग का नामकरण होता है, तब अवश्य ही उस व्यक्ति के हठ, प्रबल, दिव्य और साहस भरे व्यक्तित्व का हस्तक्षेप होता है। उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में व्यक्तिवादी मनोवृति और मनोदशा नहीं होती है। उस व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व में सामूहिकता होती है। यानी समूह उस व्यक्ति को मानता है और मानकर उसके बताए मार्ग पर गमन करता है। वह व्यक्ति जो विचार स्थापित करता है, उसमें उसका व्यक्तिगत हित और स्वार्थ नहीं होता है, बल्कि सामूहिक हित और परमार्थ होता है। उस व्यक्ति विशेष से समुदाय भी जुड़ जाता है। उस व्यक्ति के विचार में ही समुदाय अपना हित मानता और पहचानता है। तब इस व्यक्ति को सामूहिक मान्यता मिल जाती है, जैसे 'द्विवेदी युग'।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को प्रधान रूप से चार कालखण्डों या युगों में विभाजित करते हुए नामकरण किया जाता है– (1) आदिकाल–वीरगाथाकाल– विचारधारा के आधार पर, (2) पूर्वमध्यकाल –भक्तिकाल– विचारधारा के आधार पर, (3) उत्तरमध्य –काल –रीतिकाल या श्रृंगारकाल– विचारधारा के आधार पर, (4) आधुनिक काल।

आधुनिक काल को सुविधा के अनुसार अनेक कालखण्डों अथवा युगों करूप में विभाजित किया गया है– (1) भारतेन्दु युग, (2) द्विवेदी युग, (3) छायावाद युग, (4) प्रगतिवादी युग, (5)नयी कविता आदि।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के नाम पर है यह – 'द्विवेदी युग'। वास्तव में राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचानेवाले 'महावीर' ही हैं। हिन्दी भाषा, साहित्य और पत्रकारिता का यह 'महावीर'– आजीवन वीर की तरह लड़ता रहा है। संघर्षों तथा झंझावातों में भी नहीं डिगा । साहस, पराक्रम, धैर्य, लगन तथा मन से प्रयासरत रहकर अपने व्यक्तित्व तथा विचार से युग को प्रभावित करता रहा है। युग इस महावीर के पराक्रम से एक नयी दिशा मे चल पड़ा। महावीर ने अपने युग का निर्माण किया है। इसीलिए इस व्यक्ति विशेष के नाम को आधार मानकर 'द्विवेदी युग' का नामकरण हुआ है। इस नामकरण में इस व्यक्ति विशेष का प्रचण्ड प्रभाव परिलक्षित होता है।

संदर्भ सूची

1. सम्पादक – वर्मा, डॉ• धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य कोश प्रकाशक – ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी,पृ•स•–438
2. संपादकः रामवृक्ष, प्रधान संपादक– सिंह,डॉ• नामवर, महावीर प्रसाद द्विवेदी; प्रतिनिधि संकलन प्रकाशक–नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया,पृ•सं•–3,
3. लेखक– नवल, डॉ• नंदकिशोर,महावीर प्रसाद द्विवेदी ;भारतीय साहित्य के निर्माता प्रकाशक – साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली।पृ•सं•–11,12,15
4. सम्पादक– रामवृक्ष, प्रधान संपादक– सिंह,डॉ• नामवर, महावीर प्रसाद द्विवेदी ;हिंदी नवजागरण के अग्रदूत,पृ•सं•–5,
5. प्रकाशक – नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया। सम्पादन – उपाध्याय, रामेश्वर, शफीक,श्रीमती चन्द्रकला, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी –
   प्रकाशक–प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, पृ•सं•–12,18.
6. सम्पादक–धर्मेन्द्र,डॉ• बी. आर, धर्मेन्द्र,डॉ•; श्रीमती उषा, आचार्य द्विवेदी ;साहित्य और पत्राकारिता के सरोकार,पृ•सं•–25
   प्रकाशक – इरावादी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली–18